शिल्पी

बाबा नागार्जुन को भावबोध और कविता के मिज़ाज के स्तर पर सबसे अधिक निराला और कबीर के साथ जोड़कर देखा गया है। वैसे, यदि जरा और व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो नागार्जुन के काव्य में अब तक की पूरी भारतीय काव्य-परंपरा ही जीवंत रूप में उपस्थित देखी जा सकती है। उनका कवि-व्यक्तित्व कालिदास और विद्यापति जैसे कई कालजयी कवियों के रचना-संसार के गहन अवगाहन, बौद्ध एवं मार्क्सवाद जैसे बहुजनोन्मुख दर्शन के व्यावहारिक अनुगमन तथा सबसे बढ़कर अपने समय और परिवेश की समस्याओं, चिन्ताओं एवं संघर्षों से प्रत्यक्ष जुड़ाव तथा लोकसंस्कृति एवं लोकहृदय की गहरी पहचान से निर्मित है। उनका 'यात्रीपन' भारतीय मानस एवं विषय-वस्तु को समग्र और सच्चे रूप में समझने का साधन रहा है। मैथिली, हिन्दी और संस्कृत के अलावा पालि, प्राकृत, बांग्ला, सिंहली, तिब्बती आदि अनेकानेक भाषाओं का ज्ञान भी उनके लिए इसी उद्देश्य में सहायक रहा है। उनका गतिशील, सक्रिय और प्रतिबद्ध सुदीर्घ जीवन उनके काव्य में जीवंत रूप से प्रतिध्वनित-प्रतिबिंबित है। नागार्जुन सही अर्थों में भारतीय मिट्टी से बने आधुनिकतम कवि हैं।

बाबा नागार्जुन ने जब लिखना शुरू किया था तब हिन्दी साहित्य में छायावाद उस चरमोत्कर्ष पर था, जहाँ से अचानक तेज

Scanned with CamScanner

गांधी जी ने भारत के लिए एक रामराज्य का आदेश रखा |उनका सपना पूरा करने तथा उनके आदर्शों पर चलने वाले सर्वोदय समाज के कथनी और करनी पर उन्होंने बहुत ही चुटीले ढ़ंग से अंतर स्पष्ट करते हुए अपनी कविता लिखी 'तीनों बन्दर बापू के'(१९६९)

करे रात दिन टूर हवाई ,तीनों बन्दर बापू के
बदल-बदल कर चखे मलाई,तीनों बन्दर बापू के
(कविताकोश से साभार)

नागार्जुन जी साफ़-साफ़ कहते हैं :-

छील रहे गीता की खाल
उपनिषदें हैं इनकी ढाल
इधर सजे मोती के थाल
उधर जमे सतजुगी दलाल
मत पूछों तुम इनका हाल
सर्वोदय के नटवर लाल (कविताकोश से साभार)

नागार्जुन जी का काव्य तथा उनका व्यंग्य समाज में सत्य को खोजता हैं यह एक ऐसा व्यंग्य है जो भीड़ के अन्दर धंसकर सत्य को खोजने का माद्दा रखता है समाज के किसी सत्य का सामना जब उनसे होता है तो उनकी कविता आकार लेने लगती है इसी तरह वह शिक्षा व्यवस्था के वास्तविकताओं को इस प्रकार स्पष्ट करते हैं :-

खून पसीना किया बाप ने एक जुटाई फ़ीस
आँख निकल आयी पढ़-पढ़ के नंबर आये तीस
शिक्षा मंत्री ने कहा सीनेट में –अजी शाबास
सोना हो जाता हराम यदि ज्यादा हो जाते पास
फेल पुत्र का पिता दुखी है सिर धुन रही है माता

Scanned with CamScanner

दुविधा नहीं है।....यही कारण है कि खतरनाक सच साफ बोलने का वे खतरा उठाते हैं।

अपनी एक कविता "प्रतिबद्ध हूँ" में उन्होंने दो टूक लहजे में अपनी दृष्टि को स्पष्ट किया है–

प्रतिबद्ध हूँ,
जी हाँ, प्रतिबद्ध हूँ–
बहुजन समाज की अनुपल प्रगति के निमित्त–
संकुचित 'स्व' की आपाधापी के निषेधार्थ
अविवेकी भीड़ की 'भेड़िया-धसान' के खिलाफ
अंध-बधिर 'व्यक्तियों' को सही राह बतलाने के लिए
अपने आप को भी
'व्यामोह' से बारंबार
उबारने की खातिर प्रतिबद्ध हूँ,
जी हाँ, शतधा प्रतिबद्ध हूँ!

नागार्जुन का संपूर्ण काव्य-संसार इस बात का प्रमाण है कि उनकी यह प्रतिबद्धता हमेशा स्थिर और अक्षुण्ण रही, भले ही उन्हें विचलन के आरोपों से लगातार नवाजा जाता रहा। उनके समय में छायावाद, प्रगतिवाद, हालावाद, प्रयोगवाद, नयी कविता, अकविता, जनवादी कविता और नवगीत आदि जैसे कई काव्य-आंदोलन चले और उनमें से ज्यादातर कुछ काल तक सरगर्मी दिखाने के बाद चलते बने। पर बाबा की कविता

Scanned with CamScanner

कविता, अकविता, जनवादी कविता और नवगीत आदि जैसे कई काव्य-आंदोलन चले और उनमें से ज्यादातर कुछ काल तक सरगर्मी दिखाने के बाद चलते बने। पर बाबा की कविता इनमें से किसी 'चौखटे' में अँट कर नहीं रही, बल्कि हर 'चौखटे' को तोड़कर आगे का रास्ता दिखाती रही। उनके काव्य के केन्द्र में कोई 'वाद' नहीं रहा, बजाय इसके वह हमेशा अपने काव्य-सरोकार 'जन' से ग्रहण करते रहे। उन्होंने किसी बँधी-बँधायी लीक का निर्वाह नहीं किया, बल्कि अपने काव्य के लिए स्वयं की लीक का निर्माण किया। इसीलिए बदलते हुए भावबोध के बदलते धरातल के साथ नागार्जुन को विगत सात दशकों की अपनी काव्य-यात्रा के दौरान अपनी कविता का बुनियादी भाव-धरातल बदलने की जरूरत महसूस नहीं हुई। "पछाड़ दिया मेरे आस्तिक ने" जैसी कविता में 'बाबा का काव्यात्मक डेविएशन' भी सामान्य जनोचित है और असल में, वही उस कविता के विशिष्ट सौंदर्य का आधार भी है। उनकी वर्ष 1939 में प्रकाशित आरंभिक दिनों की एक कविता 'उनको प्रणाम' में जो भाव-बोध है, वह वर्ष 1998 में प्रकाशित उनके अंतिम दिनों की कविता 'अपने खेत में' के भाव-बोध से बुनियादी तौर पर समान है। आज इन दोनों कविताओं को एक साथ पढ़ने पर, यदि उनके प्रकाशन का वर्ष मालूम न हो तो यह पहचानना मुश्किल होगा कि उनके रचनाकाल के बीच तकरीबन साठ वर्षों का फासला है। जरा इन दोनों कविताओं की एक-एक बानगी देखें–

जो नहीं हो सके पूर्ण-काम मैं उनको करता हूँ प्रणाम जिनकी सेवाएँ अतुलनीय पर विज्ञापन से रहे दूर प्रतिकूल परिस्थिति ने

Scanned with CamScanner

नागार्जुन ने लोकप्रियता और कलात्मक सौंदर्य के संतुलन और सामंजस्य की समस्या को जितनी सफलता से हल किया है, उतनी सफलता से बहुत कम कवि–हिन्दी से भिन्न भाषाओं में भी–हल कर पाए हैं।

बाबा की कविताओं की लोकप्रियता का तो कहना ही क्या! बाबा उन विरले कवियों में से हैं जो एक साथ कवि-सम्मेलन के मंचों पर भी तालियाँ बटोरते रहे और गंभीर आलोचकों से भी समादृत होते रहे। बाबा के इस जादुई कमाल के बारे में खुद उन्हीं की जुबानी यह दिलचस्प उद्धरण सुनिए–

कवि-सम्मेलनों में बहुत जमते हैं हम। समझ गए ना? बहुत विकट काम है कवि-सम्मेलन में कविता सुनाना। बड़े-बड़ों को, तुम्हारा, क्या कहते हैं, हूट कर दिया जाता है। हम कभी हूट नहीं हुए। हर तरह का माल रहता है, हमारे पास। यह नहीं जमेगा, वह जमेगा। काका-मामा सबकी छुट्टी कर देते हैं हम....। समझ गए ना?

उनकी एक अत्यंत प्रसिद्ध कविता 'अकाल और उसके बाद' लोकप्रियता और कलात्मक सौंदर्य के मणिकांचन संयोग का एक उल्लेखनीय उदाहरण है।

Scanned with CamScanner

काव्य जगत में सभी प्रकार के वादों के अंत का दौर चल रहा था। बाबा अपने जीवन और सर्जन के लंबे कालखंड में चले सभी राजनीतिक एवं साहित्यिक वादों के साक्षी रहे, कुछ से संबद्ध भी हुए, पर आबद्ध वह किसी से नहीं रहे। उनके राजनीतिक 'विचलनों' की खूब चर्चा भी हुई। पर कहने की जरूरत नहीं कि उनके ये तथाकथित 'विचलन' न सिर्फ जायज थे बल्कि जरूरी भी थे। वह जनता की व्यापक राजनीतिक आकांक्षा से जुड़े कवि थे, न कि मात्र राजनीतिक पार्टियों के संकीर्ण दायरे में आबद्ध सुविधाजीवी कामरेड। कोई राजनीतिक पार्टी जब जनता की राजनीतिक आकांक्षा की पूर्ति के मार्ग से विचलित हो जाए तो उस राजनीतिक पार्टी से 'विचलित' हो जाना विवेक का सूचक है, न कि 'विपथन' का। प्रो. मैनेजर पांडेय ने सही टिप्पणी की है कि

एक जनकवि के रूप में नागार्जुन खुद को जनता के प्रति जवाबदेह समझते हैं, किसी राजनीतिक दल के प्रति नहीं। इसलिए जब वे साफ ढंग से सच कहते हैं तो कई बार वामपंथी दलों के राजनीतिक और साहित्यिक नेताओं को भी नाराज करते हैं। जो लोग राजनीति और साहित्य में सुविधा के सहारे जीते हैं वे दुविधा की भाषा बोलते हैं। नागार्जुन की दृष्टि में कोई दुविधा नहीं है।....यही कारण है कि खतरनाक सच साफ बोलने का वे खतरा उठाते हैं।

अपनी एक कविता "प्रतिबद्ध हूँ" में उन्होंने दो टूक लहजे में अपनी दृष्टि को स्पष्ट किया है–

Scanned with CamScanner

बाबा नागार्जुन ने अवसरवादी,चरणवंदनागीरी,चाटुकारों से समाज को अलग करने तथा उनकी करतूतों के साथ एक नयापन देते हुए रैदास के पड़ का प्रयोग करते हुए बड़ी ही साफ़गोईपन से अपनी,अमरीकी राष्ट्रपति जानसन पर लिखी गयी कविता में दर्शातें हैं कि :-

हम काहिल हैं हम भिखमंगे,तुम हौ औढरदानी
अबकी पता चला हैं प्रभु जी,तुम चन्दन हम पानी
हम निचाट धरती निदाध की,तुम बादल बरसाती
अबकी पता चला हैं प्रभु जी,तुम दीपक हम बाती
(कविताकोश से साभार)

गाँधी जी ने भारत के लिए एक रामराज्य का आदर्श रखा |उनका सपना पूरा करने तथा उनके आदर्शों पर चलने वाले सर्वोदय समाज के कथनी और करनी पर उन्होंने बहुत ही चुटीले ढ़ंग से अंतर स्पष्ट करते हुए अपनी कविता लिखी 'तीनों बन्दर बापू के'(१९६९)

करे रात दिन टूर हवाई ,तीनों बन्दर बापू के
बदल-बदल कर चखे मलाई,तीनों बन्दर बापू के
(कविताकोश से साभार)

नागार्जुन जी साफ़-साफ़ कहते हैं :-

छील रहे गीता की खाल
उपनिषदें हैं इनकी ढाल
इधर सजे मोती के थाल
उधर जमे सतजुगी दलाल
मत पूछों तुम इनका हाल
सर्वोदय के नटवर लाल (कविताकोश से साभार)

नागार्जुन जी का काव्य तथा उनका व्यंग्य समाज में सत्य को खोजता हैं यह एक ऐसा व्यंग्य है जो भीड़ के अन्दर

Scanned with CamScanner

इस तरह की बाबा की दर्जनों खूबसूरत कविताएँ हैं जो इस दृष्टि से उनके समकालीन तमाम कवियों की कविताओं से विशिष्ट कही जा सकती हैं। कलात्मक सौंदर्य की कविताएँ शमशेर ने भी खूब लिखी हैं, पर वे लोकप्रिय नहीं हैं। लोकप्रिय कविताएँ धूमिल की भी हैं पर उनमें कलात्मक सौंदर्य का वह स्तर नहीं है जो नागार्जुन की कविताओं में है। बाबा की कविताओं में आखिर यह विलक्षण विशेषता आती कहाँ से है? दरअसल, बाबा की प्राय: सभी कविताएँ संवाद की कविताएँ हैं और यह संवाद भी एकहरा और सपाट नहीं है। वह हजार-हजार तरह से संवाद करते हैं अपनी कविताओं में। आज कविता के संदर्भ में संप्रेषण की जिस समस्या पर इतनी चिंता जताई जा रही है, वैसी कोई समस्या बाबा की कविताओं को व्यापती ही नहीं। सुप्रसिद्ध समकालीन कवि केदारनाथ सिंह स्पष्ट रूप से स्वीकार करते हैं:

स्वाधीनता के बाद के कवियों में यह विशेषता केवल नागार्जुन के यहाँ दिखाई पड़ती है....यह बात दूसरे प्रगतिशील कवियों के संदर्भ में नहीं कही जा सकती।

बाबा की कविताओं की इसी विशेषता के एक अन्य कारण की चर्चा करते हुए केदारनाथ सिंह कहते हैं कि बाबा अपनी कविताओं में 'बहुत से लोकप्रिय काव्य-रूपों को अपनाते हैं और उन्हें सीधे जनता के बीच से ले आते हैं'। उनकी 'मंत्र कविता' देहातों में झाड़-फूँक करके उपचार करने वाले ओझा की शैली में है।

Scanned with CamScanner